मातृभाषा आधारित प्राथमिक शिक्षा पर अभिभावकों के दृष्टिकोण का समालोचनात्मक अध्ययन

कुलदीप कुमार पाण्डेय*
ज्ञानेन्द्र कुमार**

बच्चे विद्यालय आने से पहले आस-पास के परिवेश की भाषा के माध्यम से अपनी समझ बनाते हैं। विद्यालय में उनके घर की भाषा/मातृभाषा को माध्यम बनाने से न केवल उनमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास होता है, अपितु उनमें आत्मविश्वास भी सुदृढ़ होता है। परंतु बच्चों की शैक्षणिक और व्यावसायिक संभावनाओं पर दीर्घकालिक प्रभाव के बारे में चिंताओं के कारण अभिभावकों की ओर से निरंतर प्रतिरोध बना हुआ है। अतः प्राथमिक विद्यालय में शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग पर अभिभावकों के दृष्टिकोण का समालोचनात्मक अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। इस शोध में कथात्मक शोध डिजाइन अपनाया गया जिसका उद्देश्य यह विवेचना करना है कि अभिभावकों की मातृभाषा के संप्रत्यय तथा प्रयोग के प्रति क्या दृष्टिकोण हैं तथा इसके उपयोग के विरोध में कौन-कौन से कारक प्रभावी हैं। अध्ययन निष्कर्ष से प्रकट होता है कि भारत जैसे भाषायी विविधता वाले देश में मातृभाषा को शिक्षण माध्यम के रूप में उपयोग करने में अनेक चुनौतियाँ हैं। जैसे अभिभावकों की मातृभाषा की समझ में भिन्नता, अभिभावकों द्वारा बच्चों के भविष्य की व्यावसायिक संभावनाओं के कारण नकारात्मक दृष्टिकोण और समाज में शिक्षा माध्यम का अभिभावकों के सामाजिक प्रस्थिति से जोड़कर देखा जाना। निष्कर्षों के आधार पर, अध्ययन में सुझाव दिया गया है कि अभिभावकों में मातृभाषा के प्रति सम्मान विकसित करना, भाषायी नीतियों का जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन व सरकारी तथा निजी दोनों क्षेत्रों में अवसरों को बढ़ाना चाहिए। हालाँकि, यह लेख किसी शोध प्रक्रिया को नही अपनाता, परंतु एक आम दृष्टिकोण को दर्शाने का प्रयास है।

भारत दुनिया में अपनी विशाल सांस्कृतिक और भाषायी विविधता के लिए जाना जाता है। भारतीय संविधान अपनी आठवीं अनुसूची में 22 आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त भाषाओं को सूचीबद्ध करके

*शोधार्थी (एम.एड.), शिक्षा विभाग (सी.आई.ई.), दिल्ली विश्वविद्यालय 110 007
***सहायक आचार्य*, शिक्षा विभाग (सी.आई.ई.), दिल्ली विश्वविद्यालय 110 007

इस विविधता को मान्यता देता है। हालाँकि, भारत में बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या इस आधिकारिक संख्या से कहीं अधिक है। 1971 की जनगणना के अनुसार देश-भर में 1,600 से अधिक भाषाएँ बोली जाती हैं। उनमें केवल 47 भाषाएँ ही विद्यालय में बच्चों की समझ का माध्यम बन सकीं हैं (*समझ का माध्यम*, पृष्ठ 1)।

भारत में भाषा और अस्मिता का संबंध बहुत गहरा है। बच्चे की भाषा और अस्मिता के संबंध को देखें तो यह स्पष्ट होता है कि यदि बच्चे को उसकी मातृभाषा में अभिव्यक्ति का अधिकार व स्वीकृति नहीं मिलती तो इससे कहीं न कहीं उसकी अस्मिता खंडित होती है। बालक जन्म के साथ ही मातृभाषा अधिग्रहण सहज भाव से ही प्रारंभ कर देते हैं। इसलिए उन्हें उसी भाषा में पढ़ना-लिखना तथा बातों को समझना आसान हो जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा के महत्व को बताते हुए लिखा गया है कि "यह सर्वविदित है कि छोटे बच्चे अपनी घरेलू भाषा या मातृभाषा में जटिल विचारों को अधिक आसानी से समझ लेते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्दी किए जाएँगे कि बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण भाषा के बीच किसी भी अंतर को समाप्त किया जा सके। घरेलू भाषा या मातृभाषा में पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध न होने पर जहाँ तक संभव हो शिक्षकों की विद्यार्थियों से संवाद की भाषा घरेलू/मातृभाषा ही होनी चाहिए।" शोध यह दर्शाते हैं कि बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब उन्हें ऐसी भाषा में पढ़ाया जाता है जिसे वे अच्छी तरह समझते हैं, क्योंकि पाठ्यपुस्तकों की भाषा और बच्चों की अपनी भाषा व अनुभवों में गहरा अंतर होता है (*पढ़ने की दहलीज़ पर*, पृष्ठ 4)। यह दृष्टिकोण उन्हें बुनियादी अवधारणाओं को अधिक आसानी से समझने, मजबूत संज्ञानात्मक कौशल बनाने और आगे की शिक्षा के लिए एक ठोस आधार विकसित करने की अनुमति देता है (बारक और अन्य, 2014; एस्पोसिटो और बेकर-वॉर्ड, 2013; कोवेलमैन और अन्य, 2008)। जब बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है, तो वे सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होने में सक्षम होते हैं। इससे एक अनुकूल सीखने का माहौल बनता है जहाँ वे आत्मविश्वास महसूस करते हैं (मॉरकॉम, 2017; कमिंस, 2021; ले पिशॉन और कैमबेल, 2022) और सामग्री से जुड़े होते हैं, जो बदले में जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। इसके अलावा, प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा का उपयोग करने से बच्चे की आलोचनात्मक सोच, समस्या-समाधान क्षमताओं और समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ावा मिलता है। यह उन्हें अपनी मातृभाषा में सीखे गए कौशल को अन्य भाषाओं में स्थानांतरित करने में भी सक्षम बनाता है, जिससे बाद में दूसरी भाषा सीखना आसान हो जाता है। उदाहरण के लिए, कमिंस (1981) के भाषा हस्तांतरण के सिद्धांत से पता चलता है कि जब विद्यार्थी अपनी पहली भाषा में दक्षता विकसित करते हैं, तो वे जो संज्ञानात्मक कौशल हासिल

करते हैं, उन्हें दूसरी भाषा सीखने में स्थानांतरित किया जा सकता है। इसका मतलब है कि मातृभाषा में अवधारणाओं में महारत हासिल करना आसान और अधिक प्रभावी दूसरी भाषा अधिग्रहण का मार्ग प्रशस्त करता है। संज्ञानात्मक लाभों से परे, शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग बच्चे की पहचान और सांस्कृतिक गौरव की भावना को भी मजबूत करता है। यह उन्हें अपनी विरासत से जुड़े रहने की अनुमति देता है, जो उनके भावनात्मक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महात्मा गांधी का शैक्षिक दर्शन, विशेष रूप से 'बुनियादी शिक्षा' की अवधारणा में भी शुरुआती शिक्षा को अनिवार्य रूप से मातृभाषा में रखने की बात की गई जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास सहज भाव से हो सके (शाह, 2017)।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम की प्रासंगिकता पर नीतिगत सुझाव

प्राथमिक शिक्षा के माध्यम के लिए विश्व-भर में निरंतर अनेक अनुसंधान व प्रतिवेदन प्रकाशित होते रहते हैं। स्वतंत्रता के बाद उच्च शिक्षा में सुधार हेतु गठित राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1948–49) ने माध्यमिक विद्यालयों में सामान्य शिक्षा के विषय में लिखा कि "कक्षा 1 से 5 तक विद्यार्थी केवल मातृभाषा सीखेंगे; कक्षा 6 से 8 तक मातृभाषा और संघीय भाषा पर जोर दिया जाना चाहिए" (*रिपोर्ट ऑफ एजुकेशन कमीशन*, पृष्ठ 109)। कोठारी आयोग (1964–66) ने भी इस बात पर जोर दिया कि यह आवश्यक है कि चुना गया माध्यम विद्यार्थियों को आसानी से ज्ञान प्राप्त करने, खुद को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने और सटीकता के साथ सोचने में सक्षम बनाता हो। इस दृष्टिकोण से, मातृभाषा एक प्रमुख स्थान रखती है। इसके महत्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में त्रिभाषा सूत्र की पृष्ठभूमि को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) में शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा को रखने पर बल दिया गया (*समझ का माध्यम*, पृष्ठ 3)। जिसे शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) की धारा 29(2)(एफ) में कहा गया कि "शिक्षा का माध्यम, जहाँ तक संभव हो, बच्चे की मातृभाषा में होना चाहिए"। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जहाँ तक संभव हो, कम से कम कक्षा 5 तक, लेकिन अधिमानतः कक्षा 8 और उससे आगे तक, शिक्षण का माध्यम घरेलू भाषा/मातृभाषा रखने पर जोर दिया गया।

भारत जैसे भाषायी विविधता वाले देश में प्रारंभिक विद्यालयी भाषा का चयन आधार अत्यंत सावधानी व जिम्मेदारी का कार्य हो जाता है, क्योंकि यूनेस्को (2000) के अनुसार अल्पसंख्यक (भाषायी आधार पर) बच्चों के बीच लगातार जल्दी स्कूल छोड़ने और कम शैक्षणिक उपलब्धि आंशिक रूप से इन भाषा-शिक्षा नीतियों से उपजी हैं। यूनेस्को के शैक्षणिक आधार पत्र (2003) के अनुसार प्रारंभिक शिक्षण माध्यम के रूप में मातृभाषा अत्यंत आवश्यक है और इसे आगे जहाँ तक संभव हो जारी रखना चाहिए। मातृभाषा शिक्षण को बढ़ावा देकर, शिक्षा प्रणाली बच्चों

के लिए अधिक समावेशी, प्रभावी और सशक्त शिक्षण वातावरण बना सकती है, खासकर बहुभाषी समाजों में (यूनिसेफ इंडिया, 2024)।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

मातृभाषा शिक्षा माध्यम से संबंधित साहित्य पुनरावलोकन के अंतर्गत एजिओकोली और उग्वू (2019) ने पाया कि अभिभावकों का मातृभाषा के उपयोग और अध्ययन (विषय के रूप में) के बारे में सकारात्मक दृष्टिकोण है, परंतु माध्यम के रूप में कई अभिभावक अंग्रेजी भाषा को प्राथमिकता देते हैं। चाकमा (2012) ने अपने अध्ययन में पाया कि अभिभावकों का मातृभाषा-आधारित बहुभाषी शिक्षा के प्रति सकारात्मक और दृढ़ विश्वास था। नाओम और सारा (2014) ने केन्या में किए गए अपने शोध अध्ययन में पाया कि प्रायः सभी अभिभावक मातृभाषा शिक्षा माध्यम की सार्थकता के बावजूद बेहतर रोजगार व भविष्य की संभावनाओं के लिए इसके पक्ष में नहीं हैं। विल्लाल्बा (2013) अपने अध्ययन में पाया कि अभिभावकों ने अंग्रेजी को सामाजिक, शैक्षिक और वित्तीय उन्नति के लिए आवश्यक माना, परंतु उनके अनुसार अंग्रेजी बेहतर नौकरी के अवसर प्रदान करती है। मोगीरे (2016) ने शोध अध्ययन में मातृभाषा शिक्षा माध्यम के प्रति अधिकांश अभिभावकों का दृष्टिकोण नकारात्मक पाया। अभिभावकों के अनुसार मातृभाषा माध्यम संस्कृति को संरक्षित करने में मदद नहीं करता, बल्कि उन्हें वैश्विक अवसरों व नौकरियों तक पहुँच सीमित कर देता है तथा इससे अन्य भाषा सीखने में भी बाधा उत्पन्न होती है। टैकी-ओफोसु और अन्य (2015) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश अभिभावक मातृभाषा को सांस्कृतिक पहचान, अवधारणाओं को आसानी से समझने और प्रभावी संचार को बढ़ावा देने वाला मानते हैं। परंतु स्थानीय भाषाओं में शिक्षण सामग्री की कमी के कारण कुछ अभिभावक इसके पक्ष में नहीं हैं। इथियोपिया के शिक्षा मंत्रालय द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा के माध्यम पर सिफारिशों के लिए गठित कमीशन ह्यू और अन्य (2007) ने उल्लेख किया कि वर्तमान शिक्षा नीति द्वारा मातृभाषा प्राथमिक शिक्षा की प्राथमिकता देने पर भी अधिकांश अभिभावक इसके विपरीत दृष्टिकोण रखते हैं। वे अक्सर प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी को पहले शुरू करने की वकालत करते हैं। अर्विंद और अन्य (2024) ने वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट को रेखांकित करते हुए लिखा कि माता-पिता अपने बच्चों को अपनी आदिवासी मातृभाषा के बजाय अंग्रेजी व अन्य आधुनिक भाषा सीखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, क्योंकि इसे भविष्य में उन्नति की संभावना के रूप में देखा जाता है। झिंगरन (2009) ने शोध अध्ययन में पाया कि आस-पड़ोस व अभिभावकों द्वारा अंग्रेजी बोलने वाला माहौल न होने पर भी गरीब परिवार भी अपने बच्चों को इन निजी अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों में भेजने की आकांक्षा रखते हैं। मेगनाथन (2011) ने अध्ययन में पाया कि अंग्रेजी के प्रभुत्व को स्वीकार करते हुए आज

प्रत्येक बच्चा व अभिभावक इस भाषा को चाहता है। डेविड-एर्ब (2021) ने अपने शोध अध्ययन में बताया कि अभिभावक अपने सामाजिक दर्जे और बच्चे की शिक्षा के माध्यम के बीच एक गहरा संबंध देखते हैं। अभिभावक स्वदेशी भाषाओं को अक्सर कम प्रतिष्ठित और ग्रामीण या आर्थिक रूप से वंचित सामाजिक समूहों से संबंधित माना जाता है।

शोध उद्देश्य

- मातृभाषा के संप्रत्यय के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण की समीक्षा करना।
- प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग के बारे में अभिभावकों के दृष्टिकोण की समीक्षा करना।
- अभिभावकों के दृष्टिकोण से प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के प्रयोग में आने वाली बाधाओं की समीक्षा करना।

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य को दिल्ली के सीमित अभिभावकों तक सीमित किया गया है। दिल्ली क्षेत्र के अभिभावकों के चयन का कारण मुख्यतः इसका राजधानी होना है जिससे शैक्षिक नीतियों के सुचारु रूप से क्रियान्वयन की संभावना यहाँ सबसे पहले होती है।

शोध प्रविधि

यह अध्ययन व्याख्यात्मक प्रतिमान के भीतर स्थित कथात्मक जाँच है। इस डिजाइन को चुनने का कारण इसके व्यक्तिगत अनुभवों और व्यक्तिपरक अर्थों के गहन खोज की अनुमति देना है। इसमें उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण रणनीति द्वारा कुल 22 प्रतिभागियों का चयन किया गया। जिसमें 11 अभिभावक दिल्ली के सरकारी विद्यालयों व 11 निजी विद्यालयों से चुने गए। प्रदत्त एकत्र करने के लिए अर्ध-संरचित साक्षात्कार, अनौपचारिक विचार-विमर्श और अवलोकन का उपयोग किया गया है, जिसका अध्ययन गुणात्मक प्रकृति के साथ संरेखित करते हुए कथात्मक के माध्यम से प्रदत्त द्वारा स्पष्ट रूप से पहचानी गई थीम के अंतर्गत किया गया है।

प्रदत्त विश्लेषण व व्याख्या

अभिभावकों से अर्ध-संरचित साक्षात्कार, अनौपचारिक विचार-विमर्श और अवलोकन के माध्यम से संकलित प्रदत्त को स्पष्ट रूप से पहचानी गई थीम के व्यवस्थित रूप से विश्लेषित किया गया है। सभी थीम शोध उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए एकत्र प्रदत्त से सीधे उभरे हैं।

मातृभाषा की समझ के प्रति दृष्टिकोण

अभिभावक मातृभाषा के अर्थ को किस प्रकार देखते हैं यह पूछने पर एक अभिभावक ने यह बताया कि “परिवार की भाषा जो बच्चा अपनी माता से सीखे वही मातृभाषा है”। इसके संदर्भ में एक अभिभावक ने कहा कि उसके अनुसार “घर-परिवार में जो भाषा शुरू से ही बोली जा रही है वही भाषा मातृभाषा है”। अतः अधिकांश अभिभावकों का मानना है कि मातृभाषा घर की भाषा है जिसे बच्चा परिवार से सहज स्वभाव से अर्जित करता है न कि उसे सीखता है अर्थात उनका मानना है की मातृभाषा माँ से ग्रहण की गई भाषा है। क्षत्रिया (1968); मोयो (2009); टैकी-ओफोसु और अन्य (2015) तथा

निशांति (2020) ने मातृभाषा के इसी अर्थ की बात की है। एक अभिभावक ने मातृभाषा के अर्थ को अलग दृष्टिकोण से देखते हुए बताया कि "मेरे घर की भाषा अवधी है, परंतु मैं अपने बच्चे से हिंदी में बात करती हूँ तो उसके लिए मातृभाषा हिंदी होगी न कि अवधी"। इस प्रकार कुछ अभिभावकों ने मातृभाषा को आवश्यक रूप से परिवार की भाषा न मानते हुए बच्चों से सर्वाधिक संवाद की भाषा के रूप में माना। दो अभिभावकों ने मातृभाषा को सहजता के रूप में देखते हुए कहा कि "मेरे घर की भाषा कुमाऊनी हैं, परंतु मेरी मातृभाषा हिंदी है। हम गाँव में पहले कुमाऊनी बोलते थे, परंतु यहाँ शहर में आकर हिंदी में ज्यादा सहज हो गए"। इनके अनुसार सहजता के दृष्टिकोण से मातृभाषा परिवर्तित हो सकती है। एक अभिभावक ने सबसे अलग दृष्टिकोण रखते हुए कहा कि "मेरे घर में मैथिली बोली जाती थी तो सबसे पहले उसे ही सीखा, परंतु बाद में हिंदी भी अच्छे से सीख गया तो अब मेरे लिए दोनों मातृभाषाएँ हैं"। इस प्रकार एक अभिभावक ने यह स्वीकार किया कि एक से अधिक मातृभाषाएँ हो सकती हैं।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम का अकादमिक प्रदर्शन पर प्रभाव

अधिकांश अभिभावक यह स्वीकार करते हैं कि प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा माध्यम से पढ़ाने पर बच्चों के अकादमिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस बारे में एक अभिभावक ने कहा कि "घर की भाषा में अकादमिक प्रदर्शन सबसे अच्छा होगा, क्योंकि बच्चा जिस भाषा की शब्दावलियों को घर में प्रयोग कर रहा है उन्हीं शब्दावलियों में विद्यालय में समझेगा तो उसे नई चीज सीखने में समस्या नहीं होगी"। इससे बच्चे पर अधिक मानसिक तनाव नहीं होता है और वह चीजों को आसानी से सीख पाता है। इसी तरह का परिणाम विल्लाल्बा (2013) तथा मोगीरे (2016) ने अपने शोध अध्ययन में पाया है। बीस अभिभावकों ने यह समान रूप से स्वीकार किया कि जब बच्चों को घर के संवाद की भाषा में पढ़ाया जाएगा तो उन्हें आसानी से समझ आएगा। टैकी-ओफोसु और अन्य (2015) ने भी अपने शोध अध्ययन में इस बात की पुष्टि की है। एक अभिभावक ने इसी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि "जब घर की भाषा और स्कूल की भाषा एक होगी तो बच्चा खुल कर प्रश्न पूछ पाएगा और अपनी बात अच्छे से रख पायेगा"। अतः इनके अनुसार मातृभाषा माध्यम को समझ व विचारों की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ माध्यम है जो बच्चों के अच्छे अकादमिक प्रदर्शन के मुख्य कारक हैं। यूनेस्को (2003) तथा पटनायक (1990) के अध्ययन से भी मातृभाषा शिक्षा माध्यम से सीखने पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव की पुष्टि हुई है। एक अभिभावक ने इसके विपरीत यह तर्क दिया कि "यदि बच्चे को जन्म से जिस माध्यम से पढ़ाया जाएगा तो वह उसे ही आत्मसात कर लेगा और उसे शुरू में भले समस्या आए, परंतु वह आगे के लिए लाभदायक होगा"। इन्होंने भी यह एकमत से स्वीकार किया कि शुरू में मातृभाषा शिक्षा माध्यम बच्चे के

अकादमिक प्रदर्शन पर सकरात्मक प्रभाव डालेगा यद्यपि वे बच्चे के भविष्य की संभावनाओं को लेकर चिंतित हैं। विल्लाल्बा (2013) तथा नाओम और सारा (2014) ने भी अपने शोध अध्ययन में इसी तरह का परिणाम पाया। दो अभिभावकों ने पूर्णतः अलग दृष्टिकोण रखते हुए कहा कि "बालमन को जैसा वातावरण देंगे वह उसी में ढल जाएगा। यदि आप बच्चे को प्रारंभ से ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाएँगे तो वह उसी में सहज हो जाएगा। कोई जरूरी नहीं कि मातृभाषा माध्यम से पढ़ाने पर ही बच्चा अच्छा समझ पाएगा"। ह्यू और अन्य (2007) तथा मोगीरे (2016) ने भी अपने शोध में पाया कि मातृभाषा माध्यम और शैक्षिक प्रदर्शन में अभिभावकों का दृष्टिकोण सकारात्मक नहीं है।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम का सांस्कृतिक मूल्यों पर प्रभाव

मातृभाषा शिक्षा माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों व पारिवारिक परंपराओं पर पड़ने वाले प्रभावो के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण जानने के लिए उनसे यह प्रश्न पूछा गया। अधिकांश अभिभावकों ने यह माना कि मातृभाषा शिक्षण माध्यम से पढ़ने वाला बच्चा अपनी संस्कृति से अधिक जुड़ाव महसूस करेगा और अपने पारिवारिक परंपराओं का सम्मान करेगा। इस तरह एक अभिभावक ने कहा कि "मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाने से परिवार की परंपराएँ और सांस्कृतिक मूल्य अच्छी तरह सुरक्षित होंगे। परिवार की भाषा और विद्यालय की भाषा जब एक होगी तो संस्कृति संवर्धित होती है। इसी संदर्भ में एक और अभिभावक ने कहा कि "मातृभाषा घर और विद्यालय के बीच पुल का काम करती है। यदि बच्चे को मातृभाषा के माध्यम से पढ़ाया जाएगा तो बच्चा ही नहीं, बल्कि परिवार के सदस्य भी जुड़ाव महसूस करेंगे"। इसी दृष्टिकोण को चाकमा (2012) तथा टैकी-ओफोसु और अन्य (2015) अपने अध्ययन में भी दर्शाते हैं। जबकि तीन अभिभावकों ने सांस्कृतिक मूल्यों के लिए महत्वपूर्ण कारक के रूप में मातृभाषा को नहीं, अपितु घर व परिवार को माना। एक अभिभावक ने साझा किया कि "बच्चा परिवार के परंपराओं तथा संस्कृति को तो परिवार में सीख ही रहा है, इस पर माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। यह परिवार पर निर्भर करता है कि वह अपने बच्चे को संस्कृति और पारिवारिक मान्यताओं के बारे में कितना सिखाता है"। इनका यह दृष्टिकोण था कि शिक्षा माध्यम का सांस्कृतिक व पारिवारिक परंपराओं से कोई संबंध नहीं है। जिसे मोगीरे (2016) ने अपने अध्ययन में भी पाया है।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम का सामाजिक प्रस्थिति से संबंध

अधिकांश अभिभावकों ने एक समान रूप से यह स्वीकार किया कि मातृभाषा का माध्यम के रूप में प्रयोग सामाजिक प्रस्थिति से सीधा संबंध रखता है। जिसमें केवल दो अभिभावकों ने मातृभाषा माध्यम से अपने बच्चे को पढ़ाना गर्व के भाव से देखा बाकी अन्य मातृभाषा शिक्षा माध्यम से पढ़ाने वाले अभिभावकों के लिए यह आर्थिक मजबूरी

थी। एक अभिभावक ने अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहा कि "अभिभावक अपने सोशल स्टेटस (सामाजिक प्रस्थिति) को बढ़ा कर दिखाने के लिए अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाते हैं, उन्हें इससे कोई मतलब नहीं कि बच्चे को समझ में आ रहा है या नहीं"। एक अन्य अभिभावक अपने अनुभव को साझा करते हैं कि "हर कोई अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाने में गर्व महसूस करता है। वो गर्व से बोलता है कि मेरा बच्चा अंग्रेजी माध्यम से पढ़ रहा है वहीं एक बच्चा भले ही कितना भी पढ़ने में अच्छा हो, लेकिन उसके अभिभावक समाज में यह नहीं बोल पाते कि उनका बच्चा हिंदी माध्यम से पढ़ रहा है"। डेविड-एर्ब (2021) ने भी अपने शोध में अभिभावकों द्वारा बच्चों के शिक्षा माध्यम चयन में सामाजिक प्रस्थिति को प्रमुख कारक माना है। एक अभिभावक ने इसके विपरीत कहा कि "बच्चे को अपनी मातृभाषा माध्यम से पढ़ाना मेरे लिए गर्व की बात है, बच्चा भाषा तो कोई भी सीख सकता है"। शिक्षा माध्यम का सामाजिक प्रस्थिति के जुड़ाव की गहनता को एक अभिभावक के कथन से समझा जा सकता है जब वह कहता है कि "मुझे पता है कि निजी विद्यालय में किस प्रकार कि पढ़ाई होती है, अंत में पढ़ाना मुझे ही पड़ता है, लेकिन मुझे भी चाहिए उस विद्यालय का ठप्पा, क्योंकि वह भविष्य में मेरे बच्चे को सभी क्षेत्र में सहयोग करेगा। इस ठप्पे के साथ जब वह कहीं भी जाएगा तो उसे विशिष्ट नजर से देखा जाएगा"। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि अभिभावक भी शिक्षा के इस बजारीकरण से पूर्णतः जागरूक हैं, परंतु समाज में व्यापक रूप से किसी भाषा को उच्च दृष्टि से देखे जाने के कारण वो अपने बच्चों को अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार यथासंभव उच्च अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों में पढ़ाना चाहते हैं।

मातृभाषा शिक्षा माध्यम में व्यवसाय की संभावनाएँ

अधिकांश अभिभावक इस बात को लेकर आशंका व्यक्त करते हैं कि अगर उनके बच्चे मातृभाषा शिक्षा माध्यम में शिक्षित होते हैं, तो उन्हें कई क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है, विशेषतः नौकरी व रोजगार के मामले में। ह्यू और अन्य (2007) तथा एजिओकोली और उग्वू (2019) भी अपने अध्ययन में भविष्य की व्यावसायिक चुनौतियों को प्रमुख कारक मानते हैं। एक अभिभावक ने स्पष्ट रूप से बताया कि "बच्चा अगर अंग्रेजी माध्यम से पढ़ रहा है तो वह आगे जाएगा, क्योंकि हम देख सकते हैं कि किसी भी सूचना का प्रकाशन अंग्रेजी में निकलता है, मातृभाषा में शायद ही कोई सूचना मिले"। एक अभिभावक ने विवशतावश व्यक्त किया कि "बच्चे को अगर चाहते हैं कि वह आगे अच्छे नौकरी व व्यवसाय में जाए तो उसे अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाना ही पड़ेगा, क्योंकि आजकल अंग्रेजी को यही मानते हैं कि जिसे यह भाषा आती है वह पढ़ा लिखा है"। अतः अभिभावकों ने बच्चों के भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए उसे

प्रारंभ से ही अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने पर जोर देते हैं। अर्विंद और अन्य (2024); झिंगरन (2009) तथा मेगनाथन (2011) भी अपने शोध अध्ययनों में इसी प्रकार का परिणाम पाते हैं। दो अभिभावक इसके विपरीत दृष्टिकोण रखते हुए नौकरी व व्यवसाय के लिए मातृभाषा व स्थानीय भाषा को अत्यंत महत्वपूर्ण बताते हैं। इनमें एक अभिभावक का कथन है कि "यदि विदेशी भाषाओं में व्यापार होता तो सारी फिल्में अंग्रेजी में बन रही होतीं। मुझे तो हिंदी, तमिल, तेलुगू, मलयालम यहाँ तक की भोजपुरी की फिल्में ही नजर आती हैं। यह समाज में केवल भ्रम फैला दिया गया है कि केवल अंग्रेजी में ही नौकरी व व्यवसाय है और यदि हो भी तो बच्चा उसे भाषा के रूप में सीख सकता है"। इसी तरह का दृष्टिकोण रखने वाले दूसरे अभिभावक ने कहा कि "अपने आस-पास देखिए कौन-सा व्यापार मातृभाषा और स्थानीय भाषा में न होकर अंग्रेजी में होता है। आज तो लोग नौकरी और व्यापार करने के लिए स्थानीय भाषा सीख रहे हैं। अब अगर विदेश में व्यापार करने जाओगे तो वहाँ की भाषा आनी चाहिए न या हर जगह अंग्रेजी से काम चल जाएगा"! दोनों अभिभावकों का मानना है कि नौकरी और व्यावसाय के लिए मातृभाषा माध्यम से पढ़ाना आवश्यक है जिससे वह इसमें महारथ हासिल कर सके और उसे आगे यदि आवश्यक लगे तो अन्य भाषा सीख ले। ये जवाब भाषा और सामाजिक गतिशीलता के बीच कथित संबंध को उजागर करते हैं, जहाँ अंग्रेजी को व्यवसाय की दुनिया में सफलता के आवश्यक तत्व के रूप में देखा जाता है। एक अभिभावक साझा करता है "जिसकी जितनी चादर होती वह उतना ही पैर फैलाता है। मन तो मेरा भी होता है कि मेरे बच्चे भी किसी अच्छे निजी विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ें, परंतु हमारा बजट इतना नहीं है इसलिए हमें हिंदी माध्यम से पढ़ाना पड़ रहा है"। इस कथन में अपनी मातृभाषा के शिक्षण माध्यम में पढ़ाने की विवशता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

अभिभावकों के दृष्टिकोण से मातृभाषा शिक्षा माध्यम के प्रयोग में चुनौतियाँ

भारत में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनाने में कई जटिल चुनौतियाँ हैं, जिन्हें अभिभावकों ने विशेष रूप से रेखांकित किया है। इन्होंने भारत की विशाल भाषायी विविधता को सर्वप्रमुख कारक बताया। दिल्ली जैसे शहरी क्षेत्रों में, जहाँ विभिन्न भाषायी पृष्ठभूमि के अभिभावक एक साथ रहते हैं, शिक्षण के लिए एक विशिष्ट मातृभाषा का चयन करना अत्यंत कठिन हो जाता है। सरकारी नीतियों की भूमिका भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षण की पुरजोर सिफारिश की है, परंतु इसका कार्यान्वयन अत्यंत चुनौतीपूर्ण रहा है। सामाजिक और आर्थिक दबावों के कारण अंग्रेजी का प्रभुत्व अभी भी बना हुआ है और विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों में नीति प्रवर्तन में असंगति शैक्षिक परिणामों में असमानताएँ उत्पन्न करती है। कई अभिभावक अंग्रेजी को सामाजिक

गतिशीलता और बेहतर नौकरी की संभावनाओं की कुंजी मानते हैं। अधिकांश अभिभावक चिंतित हैं कि उनके बच्चे वैश्वीकृत दुनिया में पिछड़ न जाएँ जहाँ अंग्रेजी भाषा आवश्यक है। एक अभिभावक ने कहा कि, "आज की वैश्वीकृत दुनिया में, सफलता के लिए अंग्रेजी आवश्यक है और यही बात सभी को क्षेत्रीय भाषाओं की तुलना में अंग्रेजी को प्राथमिकता देने के लिए प्रभावित करती है"। सामाजिक धारणाओं और आर्थिक आकांक्षाओं से प्रेरित यह प्रतिरोध, मातृभाषा शिक्षा को एक व्यवहार्य शैक्षिक दृष्टिकोण के रूप में बढ़ावा देने में एक बड़ी बाधा प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त, शैक्षिक संसाधनों की गंभीर कमी भी मातृभाषा शिक्षा के मार्ग में एक अवरोध है। एक अभिभावक ने कहा, "मातृभाषा में किताबें या अन्य अध्ययन सामग्री मिलना मुश्किल है, जिसका मतलब है कि बच्चों को अंग्रेजी में पढ़ने वाले बच्चों के समान शिक्षा नहीं मिलती है"। मातृभाषा शिक्षा की सफलता के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता महत्वपूर्ण है जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बाद भारतीय भाषा समिति के गठन से तेजी अवश्य आई है।

सबसे अधिक चर्चित चुनौतियों में से एक उच्च शिक्षा में संक्रमण के दौरान विद्यालयों को आने वाली कठिनाई है। प्राथमिक स्तर पर अपनी मातृभाषा में शिक्षित विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में प्रवेश करने पर संघर्ष करना पड़ सकता है, जहाँ अंग्रेजी अक्सर शिक्षा की प्राथमिक भाषा होती है। एक अभिभावक ने चिंता व्यक्त की कि "उच्च शिक्षा अंग्रेजी में होने के कारण बच्चा पढ़ाई गई चीजों को समझे या पहले भाषा सीखे। उस पर तो दोहरा दबाव पड़ता है"। मातृभाषा में पढ़ाए जाने के बाद विद्यार्थियों की अंग्रेजी-माध्यम की शिक्षा में सहज संक्रमण की क्षमता के बारे में यह चिंता उन अभिभावकों के लिए एक महत्वपूर्ण बाधा है जो अपने बच्चों की दीर्घकालिक शैक्षिक प्रगति पर विचार कर रहे हैं।

सुझाव

- मातृभाषा शिक्षा माध्यम से बच्चे का सर्वांगीण विकास होता है, अतः मातृभाषा आधारित शैक्षिक वातावरण विकसित किया जाए।
- अभिभावकों को जागरूक किया जाए कि प्रथम भाषा में दक्षता द्वितीय भाषा सीखने में सहायक होती है न कि बाधा बनती है।
- अभिभावकों को प्रेरित किया जाए कि शिक्षा माध्यम को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ने की अपेक्षा उसे बच्चे के अच्छे सामाजिक, मानसिक व सांस्कृतिक विकास से जोड़ कर देखें।
- विद्यालय और अभिभावकों के मध्य संवाद हेतु मातृभाषा को ही प्रमुख माध्यम बनाया जाए, जिससे शिक्षा प्रक्रिया में परिवार की भागीदारी बढ़े।
- मातृभाषा की रोजगार उपयोगिता पर अभिभावकों में भ्रम है, इसलिए सफल उदाहरणों के माध्यम से विश्वास बनाया जाए।
- स्थानीय संस्कृति, लोककथाओं, परंपराओं और स्थानीय संदर्भों को पाठ्यक्रम में

सम्मिलित किया जाए जिससे मातृभाषा के प्रति सम्मान व जुड़ाव बढ़े, परिणामस्वरूप शिक्षा अधिक समावेशी हो। मातृभाषा में पढ़ने से बच्चे का अकादमिक प्रदर्शन बेहतर होता है, इसलिए शिक्षण पद्धति मातृभाषा अनुकूल होनी चाहिए।

- मातृभाषा में विद्यार्थी मूल्यांकन की वैकल्पिक विधियाँ, जैसे— मौखिक परीक्षण, परियोजनात्मक कार्य एवं स्थानीय संदर्भों पर आधारित मूल्यांकन विकसित की जाएँ तथा सभी निर्देशों व सूचनाओं को प्रसारित किया जाए जिससे समाज में मातृभाषा के प्रति सम्मान व उत्कृष्ट दृष्टिकोण विकसित हो सके।
- निजी एवं सरकारी विद्यालयों में मातृभाषा शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में सामंजस्य स्थापित किया जाए, जिससे शैक्षिक विषमता घटे और उच्च शिक्षा में संक्रमण की चिंता अभिभावकों को परेशान करती है, इसलिए बहुभाषी मॉडल अपनाया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण कराना न केवल बच्चों के अधिगम को सहज एवं नैसर्गिक बनाता है, प्रत्युत उसमें अस्मिताबोध को भी जागृत करता है, किंतु यह भी सच्चाई है कि वर्तमान समय में प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा शिक्षा माध्यम का सफल कार्यान्वयन बहुआयामी चुनौतियों से घिरा हुआ है। जिसमें भाषायी विविधता की जटिलताएँ, असमान नीतिगत समर्थन, अभिभावकों के आर्थिक और सामाजिक स्तर, शैक्षिक संसाधनों की कमी, वैश्वीकरण का दबाव और उच्च शिक्षा में भाषा संक्रमण की बाधाएँ शामिल हैं। अभिभावकों द्वारा मातृभाषा शिक्षा माध्यम से बच्चों में संज्ञानात्मक, सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास को स्वीकार करने के बाद भी प्राथमिकता न देना उनके कथित आर्थिक लाभों को दर्शाता है। जो अभिभावकों द्वारा अंग्रेजी माध्यम की शिक्षा को उच्च सामाजिक स्तर तथा मातृभाषा माध्यम को आर्थिक विवशतावश से जोड़कर देखने से भी प्रेरित है। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए एक समग्र और लचीले दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो न केवल भाषायी विविधता का सम्मान करे, बल्कि पर्याप्त शैक्षिक संसाधन प्रदान करे और विद्यार्थियों के लिए सहज शैक्षिक मार्ग प्रशस्त करे, ताकि मातृभाषा शिक्षा अपने वास्तविक उद्देश्यों को प्राप्त कर सके।

संदर्भ

अर्विंद, एस., डी. कुमार, आर. बनर्जी और डब्ल्यू. वाधवा. 2024. अंडरस्टैंडिंग द डायनैमिक्स ऑफ होम लैंग्वेज इंस्ट्रक्शन इन शेपिंग चिल्ड्रेन्स फाउंडेशनल लर्निंग : एविडेंस फ्रॉम रूरल इंडिया.

एजिओकोली, एफ.ओ. और उग्वू. 2019. पेरेंट्स, टीचर्स एंड स्टूडेंट्स बिलीफ्स अबाउट द यूज एंड स्टडी ऑफ मदर-टंग इन द सेकेंडरी स्कूल्स इन अकिन्येले लोकल गवर्नमेंट एरिया. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड लिटरेसी स्टडीज.* 7(2), पृ.सं. 82–93. ओयो स्टेट, नाइजीरिया.

कमिंस, जे. 1981. स्कूलिंग एंड लैंग्वेज माइनॉरिटी स्टूडेंट्स : थियोरेटिकल फ्रेमवर्क, प्रोफेशनल कैसेट सर्विसेज, एवैल्यूएशन. डिसेमिनेशन एंड असेसमेंट सेंटर, कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, लॉस एंजेलेस.

कोठारी, डी.एस. 1966. रिपोर्ट ऑफ द एजुकेशन कमिशन (1964–66) : एजुकेशन एंड नेशनल डेवलपमेंट. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

चाकमा, जे. 2012. पर्सेप्शन ऑफ पेरेंट्स एंड टीचर्स ऑफ चाकमा कम्युनिटी टुवर्ड्स मदर टंग-बेस्ड मल्टीलिंग्वल एजुकेशन एट अर्ली प्राइमरी लेवल डॉक्टोरल डिजर्टेशन. बी.आर.ए.सी. यूनिवर्सिटी.

छत्रिया, के. 1968. *मातृभाषा शिक्षण*. पृ.सं. 5. विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.

झिंगरन, डी. 2009. हंड्रेड्स ऑफ होम लैंग्वेजेस इन द कंट्री एंड मैनी इन मोस्ट क्लासरूम्स : कोपिंग विद डाइवर्सिटी इन प्राइमरी एजुकेशन इन इंडिया. *सोशल जस्टिस थ्रू मल्टीलिंगुअल एजुकेशन*. पृ.सं. 250, 267.

टैकी-ओफोसु, वी., एस. महामा, ई.एस.टी.डी. वैनडाइक, डी.के. कुमादोर और एन.ए.ए. टोकू. 2015. मदर टंग यूसेज इन घानाइयन प्री-स्कूल्स : परसेप्शंस ऑफ पेरेंट्स एंड टीचर्स. *जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस*. 6(34), पृ.सं. 81.

डेविड-एर्ब, एम. 2021. लैंग्वेज ऑफ इंस्ट्रक्शन : कन्सर्निंग इट्स चॉइस एंड सोशल प्रेस्टिज इन बुर्किना फासो. *इंटरनेशनल रिव्यू ऑफ एजुकेशन*. 67(4), पृ.सं. 435–449.

नाओम, एन. और ए. सारा. 2014. मदर टंग इन इन्स्ट्रक्शन : द रोल ऑफ एटिट्यूड इन द इम्प्लीमेंटेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन सोशल साइंसेज*. 4(1), पृ.सं. 77–87.

बॉल, जे. 2011. एन्हांसिंग लर्निंग ऑफ चिल्ड्रन फ्रॉम डाइवर्स लैंग्वेज बैकग्राउंड्स : मदर टंग-बेस्ड बाइलिंग्वल और मल्टिलिंग्वल एजुकेशन इन द अर्ली इयर्स. यूनेस्को.

बारक, आर., ई. बायलिस्टोक, डी.सी. कैस्ट्रो और एम. सांचेज. 2014. द कॉग्निटिव डेवलपमेंट ऑफ यंग डुअल लैंग्वेज लर्नर्स : अ क्रिटिकल रिव्यू. *अर्ली चाइल्डहुड रिसर्च क्वार्टरली*. 29(4), पृ.सं. 699–714.

भारत सरकार. 2009. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 राजपत्रित अधिसूचना. द *गैजेट ऑफ इंडिया एक्स्ट्राऑर्डिनरी*. पृ.सं. 1–13.

मॉरकॉम, एल.ए. 2017. सेल्फ-एस्टीम एंड कल्चरल आइडेंटिटी इन एबोरिजिनल लैंग्वेज इमर्सन किंडरगार्टनर्स. *जर्नल ऑफ लैंग्वेज, आइडेंटिटी एंड एजुकेशन*. 16(6), पृ.सं. 365–380.

मेगनाथन, आर. 2011. लैंग्वेज पॉलिसी इन एजुकेशन एंड द रोल ऑफ इंग्लिश इन इंडिया : फ्रॉम लाइब्रेरी लैंग्वेज टू लैंग्वेज ऑफ एम्पावरमेंट (ऑनलाइन सबमिशन).

मोगीरे, एम.जे. 2016. पेरेंट्स पर्सेप्शन ऑन यूज ऑफ मदर टंग ऐज अ मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन इन प्राइमरी स्कूल्स इन मसाबा साउथ सब-काउंटी. केन्या.

यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन. 1951. द *रिपोर्ट ऑफ द यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन* (पुनर्मुद्रण संस्करण 1962). पृ.सं. 109. मैनेजर ऑफ पब्लिकेशंस, सिविल लाइंस, नई दिल्ली.

यूनेस्को. 2003. एजुकेशन इन अ मल्टीलिंगुअल वर्ल्ड. *यूनेस्को एजुकेशन पोजीशन पेपर*. यूनेस्को, पेरिस.

रा.शै.अ.प्र.प. 2008. *पढ़ने की दहलीज पर* (पुनर्मुद्रण संस्करण मई 2014). राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2010. *समझ का माध्यम* (पुनर्मुद्रण संस्करण जून 2021). राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2018. *भाषा शिक्षण हिंदी* (भाग 1). राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

विल्लाल्बा, वी.एल. 2013. मदर टंग ऐज मीडियम ऑफ इन्स्ट्रक्शन : पेरेंट्स एंड टीचर्स एटिट्यूड्स एंड प्यूपिल्स' लिसनिंग कॉम्प्रिहेन्शन (अनपब्लिश्ड मास्टर्स थीसिस).

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

ह्यू, के., सी. बेंसन, बी. बोगाले और एम.जी. योहान्स. 2007. फाइनल रिपोर्ट, स्टडी ऑन मीडियम ऑफ इंस्ट्रक्शन इन प्राइमरी स्कूल्स इन इथियोपिया. *कमिशन्ड बाय द मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन* (सितंबर–दिसंबर, 2006).